हिन्दी साहित्य में पत्र–पत्रिकाओं का उद्‌भव और विकास

डॉ. आर.पी. वर्मा,
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय गोसाईखेड़ा,
जनपद–उन्नाव, उ.प्र.

पत्र–पत्रिकाओं की दृष्टि से आज हिन्दी भाषा समृद्ध मानी जाती है। हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं ने अपने 150 वर्ष के जीवन में काफी प्रगति की है। आजकल भारत में हिन्दी पत्र–पत्रिकाएँ ही संख्या में सबसे अधिक प्रकाशित होती हैं। अहिन्दी–भाषी क्षेत्रों में भी अनेक पत्रिकायें हिन्दी में प्रकाशित होती रहती है। आज तो पत्रों की इतनी भरमार है कि लगभग प्रत्येक बडे शहर में प्रति मास दो–चार पत्रों का प्रकाशन आरम्भ होता है और दो–चार किसी अभाव के कारण बन्द हो जाते हैं। यह सभी जानते हैं कि पत्र–पत्रिकाएँ हमारे सामाजिक जीवन को कितना प्रभावित करती है। हम देश–विदेश की प्रत्येक हलचल का नवीनतम लेखा'–जोखा उन्हीं के द्वारा प्राप्त करते हैं। छोटे–छोटे नगरों में पत्रों की पहुँ केवल शिक्षित वर्ग तक ही रहती है, अन्य वर्ग वाले पत्र खरीदना–पैसे का अपव्यय मानते हैं। परन्तु कलकत्ता, बम्बई जैसे विशाल नगरों में निम्न आर्थिक और शैक्षिक–स्तर के व्यक्ति भी, जो अटक–अटक कर पढ़ पाते हैं, अखबार लिए हुए दिखाई देते हैं। यह हमारी व्यापक सामाजिक चेतना का प्रतीक है। आजकल तो छोटे–छोटे नगरों में भी दैनिक पत्र सामान्य, अर्द्धशिक्षित समाज में भी खूब पढ़े जाते हैं। आज समाज का प्रत्येक व्यक्ति राजनीतिक चेतना की गतिविधि जानने को उत्सुक रहता है। अतः जिस प्रकार हम अपने साहित्य का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसका ऐतिहासिक विकास देखते हैं, उसी प्रकार पत्रों का ऐतिहासिक विकास–सम्बन्धी–ज्ञान भी हमारे साहित्य–ज्ञान की अभिवृद्धि में सहायक हो सकता है, क्योंकि पत्र–पत्रिकाएँ हमारे साहित्य का एक अत्यन्त उपयोगी तथा समृद्ध अंग है। हमारा अधिकांश–साहित्य पहले पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से ही हमें पढ़ने को मिल जाता है। उसके बाद ही पुस्तकों के रूप में प्रकाशित होता है।

हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं के क्रमिक विकास का इतिहास प्रस्तुत करने का सर्वप्रथम श्रेय भारतेन्दु–युगीन बाबू राधाकृष्णदास को है। उन्होंने हिनदी के 'सामाजिक पत्रों का इतिहास' नामक पुस्तक लिखकर इस दिशा में सर्वप्रथम पग उठाया था। इसके उपरान्त बाबू बालमुकुन्द गुप्त के विभिन्न लेखों के संग्रहीत रूप 'गुप्त निबन्धाबली' द्वारा इस विषय पर पर्याप्त प्रकाश पड़ा। उसमें गुप्तजी द्वारा प्रस्तुत लगभग 16 उर्दू अखबारों और 25 हिन्दी अखबारों का संक्षिप्त परिचय दिया गया था। उपर्युक्त दोनों सूत्रों के आधार पर हिन्दी–संसार राजा शिवप्रसाद द्वारा प्रकाशित बनारस अखबार (सन् 1845) को हिन्दी का सर्वप्रथम अखबार मानने लगा था। परन्तु आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 'उदन्त–मार्त्तण्ड' को हिन्दी का सर्वप्रथम अखबार मानते हैं, जिसका प्रकाशन 30 मई 1826 को श्री जुगलकिशोर शुक्ल के सम्पादन में हुआ था। 'उदन्त मार्त्तण्ड' हिन्दी का सर्वप्रथम समाचार–पत्र था, इसका प्रमाण उसकी आरम्भिक विज्ञप्ति है– "यह उदन्त मार्त्तण्ड अब पहले–पहल ओ फारसी ओ बँगले में जो समाचार का कागज छपता है उसका सुख उन बोलियों के जानने ओ पढ़ने वालों को ही होता है। इसके

सत्य समाचार हिन्दुस्तानी लोग देखकर आप पढ़ ओ समझ लेय ओ पराई अपेक्षा न करें ओ अपने भाषा की उपज न छोड़ें इसलिए बड़े दयावान करुणा और गुणीन के निधान सब के कल्याण के विषय गवरनर जेनरुल बहादुर की आयस से ऐसे साहस में चित्त लगाय के एक प्रकार से यह क्या ठाठ–ठाटा... ।"

इस पत्र में खड़ीबोली का उल्लेख 'मध्यदेशीय भाषा' के नाम से किया गया था। एक वर्ष से कुछ अधिक चलकर यह पत्र धनाभाव, ग्राहकाभाव और सरकारी सहायता न मिलने के कारण बन्द हो गया। उन दिनों सरकारी सहायता के बिना किसी भी पत्र का चलना असम्भव था, क्योंकि ग्राहकों की संख्या नगण्य होती थी।

हिन्दी के इस प्रथम समाचार–पत्र से पूर्व अन्य भारतीय भाषाओं में कुछ पत्रों का निकलना आरम्भ हो चुका था। सन् 1810 में कलकत्ता से 'हिन्दुस्तानी' नामक एक लिथो–पत्र निकला। सन् 1816 में बँगला का प्रथम सत्र 'बँगला गजेट' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। सन् 1818 में सीतापुर के पादरियों के प्रसिद्ध समाचार–पत्र 'समाचार' के दर्शन हुए। बालमुकुन्द गुप्त के अनुसार सन् 1833 में उर्दू का पहला अखबार दिल्ली के प्रोफेसर मुहम्मद हुसैन आजाद के पिता द्वारा निकाला गया था, जिसके नाम का पता नहीं चलता। परन्तु डाक्टर रामरतन भटनागर के अनुसार सन् 1823 में 'शम्शुल' नामक उर्दू–अखबार का प्रकाशन हो चुका था। सबसे प्रसिद्ध और पहले प्रकाशित उर्दू अखबारों में लाहौर के 'कोहेनूर' का विशेष महत्व है। इसका प्रकाशन सन् 1850 में हुआ था। इस पत्र ने थोड़े ही दिनों में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली थी। इससे भी पूर्व दिल्ली के 'उर्दू' अखबार ने जो सन् 1833 में प्रकाशित हुआ था, विशेष प्रसिद्धि पाई थी। सन् 1827 में मराठी के प्रथम समाचार–पत्रों का इतिहास भारत की अन्य भाषाओं के समाचार पत्रों के साथ ही आरम्भ होता है।

हिन्दी के सर्वप्रथम पत्र 'उदन्त मार्त्तण्ड' का उल्लेख पीछे किया जा चुका है। इसके उपरान्त सन् 1829 में कलकत्ता से 'बंगदूत' निकला। इसके सम्पादक नीलरत्न हालदार थे। यह साप्ताहिक था, जिसका प्रकाशन प्रति रविवार को होता था। इसके उपरान्त दूसरा उल्लेख योग्य पत्र बनारस के राजा शिव प्रसाद की प्रेरणा से सन् 1845 में 'बनारस अखबार' नाम से लिकाला। यह रद्दी कागज पर लिथो द्वारा छापा जाता था। एक महाराष्ट्री सज्जन गोविंद रघुनाथ अत्रे इसके सम्पादक थे। इसकी भाषा में हिन्दी–उर्दू की खिचड़ी रहती थी। सन् 1846 में मौलवी नासुरुद्दीन के सम्पादन मेमं 'मार्त्तण्ड' नामक एक पत्र हिन्दी उर्दू, बंगला, फारसी और अंग्रेजी में एक साथ निकाला गया। इसके तीन वर्ष बाद सन् 1849 में 'मालवा अखबार' नामक एक साप्ताहिक पत्र हिन्दी–उर्दू में एक साथ प्रकाशित हुआ।

"जिस प्रकार गद्य लिखने की नींव आधुनिक हिन्दी में उर्दू–गद्य से दो–एक साल ही पीछे पड़ी वैसे ही समाचार–पत्र की नींव भी दो–चार साल बाद ही पड़ गई थी।" (बालमुकुन्द गुप्त)। गुप्तजी ने उपर्युक्त बात लाहौर के 'कोहेनूर' और बनारस के 'सुधाकर' नामक पत्र का एक साथ प्रकाशन देखकर ही कही थी। 'सुधाकर' का सम्पादन तारामोहन मित्र नामक एक बंगाली सज्जन ने किया था। 'सुधाकर' यद्यपि बहुत दिन नहीं चल सका, फिर भी अपनी एक अमर यादगार छोड़ गया–वह है काशी के प्रसिद्ध ज्योतिर्विद महामहोपाध्याय स्वर्गीय पंडित सुधाकर द्विवेदी। कहा जाता है कि जिस दिन सुधाकर द्विवेदी का जन्म हुआ था, उसी दिन डाकिए ने 'सुधाकर' पत्र का पहला अंक लाकर जिस समय दिया था, उसी समय घर के भीतर से सुधाकरजी के चाचा को भतीजा होने का शुभ समाचार सुनाया गया था। इसलिए उन्होंने उस पत्र के नाम पर अपने भताजे का भारत 'सुधाकर' रख दिया था।

'सुधाकर' का प्रकाशन 'बनारस अखबार' की उर्दू–प्रधान भाषा–नीति के विरोध में किया गया था। इसी वर्ष कलकत्ता से जुगलकिशोर शुक्ल के सम्पादन में साम्यदण्ड मार्त्तण्ड सन् 1852 में सदासुखलाल के सम्पादन में 'बुद्धि–प्रकाश' और सन् 1853 में ग्वालियर से लक्ष्मणप्रसाद के सम्पादन में 'ग्वालियर गजट' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसके उपरान्त 1854 में कलकत्ता से हिन्दी के सर्वप्रथम दैनिक–पत्र 'समाचार सुधावर्षण' का प्रकाशन श्यामसुन्दर सेन के सम्पादन में हुआ। इसके उपरान्त सन् 1854 से 1860 तक हिन्दी में किसी भी पत्र का प्रकाशन आरम्भ नहीं किया जा सका। सन् 1861 से पुनः हिन्दी के 6 समाचार–पत्र निकले। इसी वर्ष आगरा से राजा लक्ष्मण सिंह ने प्रजा हितैषी निकाला। 'सुधाकर' और 'प्रजा–हितैषी' की भाषा–विषयक नीति 'बनारस अखबार' की विरोधी थी। उस समय के अधिकांश पत्र आगरा से प्रकाशित होते थे, क्योंकि आगरा उन दिनों (और आज भी) शिक्षा का एक बड़ा केन्द्र था। सन् 1866 में गुलाबशंकर के सम्पादन में तत्व–बोधिनी का प्रकाशन हुआ।

साधारणतया इस युग में उर्दू–पत्रों की भरमार रही थी। उर्दू–पत्रों में कहीं–कहीं हिन्दी का भी कुछ अंश छाप दिया जाता था। सरकार की हिन्दी–विरोधी नीति के कारण हिन्दी–पत्रों की बिक्री बहुत कम हो पाती थी। दूसरी बात यह भी कि उस समय तक हिन्दी पत्रकार भाषा–शैली के सम्बन्ध में किसी निश्चित दिशा का अनुसरण नहीं कर सके थे। इनके पत्रों की भाषा अस्थिर और प्रकाशन अव्यवस्थित रहता था। समाचार भी ठीक ढंग और नियमित रूप से नहीं छापे जाते थे। इसी कारण उस समय उर्दू–पत्र जनता में अधिक लोकप्रिय थे। इसलियो इस युग को हम 'हिन्दी–पत्रों का प्रयोग–काल' कह सकते हैं। भारतेन्दु से पूर्व, हिन्दी–पत्रों का जन्म हो चुका था, पर विपरीत वातावरण साधनों और सहायकों के अभाव के कारण वे पनप न सकें।

इस युग में अनेक पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ। सन् 1867 में भारतेन्दु ने कवि–वचन सुधा का प्रकाशन आरम्भ किया, जिसे हम हिन्दी का सबसे प्रथम महत्वपूर्ण पत्र कह सकते हैं। इस पत्रिका से कुछ समय पूर्व से ही 'ज्ञान दीपक' (1866) और 'वृतान्त विलास' (1867) नामक पत्रों का प्रकाशन चल रहा था। परन्तु भाषा कला और पत्रकारिता की दृष्टि से इनका कोई विशेष मूल्य नहीं था। पहले 'कवि–वचन सुधा' में केवल कवियों की रचनाएँ ही प्रकाशित होती थी, समाचार नहीं छापे जाते थे। परन्तु जब आगे चलकर इसका रूप साप्ताहिक हो गया तो इसमें निबन्धों और समाचारों को भी स्थान मिलने लगा। इसके अनुकरण पर 'हिन्दू–बान्धव' और 'ज्ञानप्रदायनी' आदि पत्र प्रकाशित हुए परन्तु असफल रहे। सन् 1873 में 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' का प्रकाशन हुआ। 'कवि–वचन सुधा' से लेकर 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' तक भारतेन्दु भाषा–शैली और विचार के क्षेत्रों में नया मार्ग खोजते रहे। परन्तु आठ अंक प्रकाशित होने के बाद यह भी बन्द हो गई। सन् 1873 में ही भारतेन्दु ने 'बाल–बोधनी' निकली। यह केवल सरकारी सहायता से कुछ दिन चल सकी, फिर बन्द कर देनी पड़ी। सन् 184 में श्री हरिश्चन्द्र–चन्द्रिका तथा 'स्त्रीजन की प्यारी' का प्रकाशन कराया गया। इन पत्रों में सरकार के विरुद्ध सैकड़ों लेख, कविता और टिप्पणियाँ प्रकाशित होती रहती थी। 'कवि–वचन सुधा' के व्यंग्य पर रुष्ट होकर काशी के अंग्रेज–मजिस्ट्रेट ने भारतेन्दु के पत्रों को शिक्षा–विभाग के लिए खरीदने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। भारतेन्दु की इस निर्भीकता ने उस काल के अनेक पत्रों को प्रोत्साहित किया था।

सन् 1874 में लाला श्रीनिवासदास ने दिल्ली में 'सदादर्श' का प्रकाशन आरम्भ किया। सन् 1876 में 'काशी पत्रिका' निकली सन् 1877 का साल हिन्दी–पत्रकारिता के इतिहास में विशेष महत्व रखता है। इसी वर्ष बालकृष्ण भट्ट का हिन्दी–प्रदीप, लाहौर से 'मित्र–विलाप' तथा पं0

रुद्रदत्त शर्मा के सम्पादन में 'भारत–मित्र' का प्रकाशन हुआ। 'हिन्दी–प्रदीप' का नामकरण भारतेन्दु ने किया था। यह लगभग 33 वर्ष तक चलता रहा। सन् 1878 में दुर्गाप्रसाद मिश्र ने 'उचित कला' तथा सदानंद मिश्र ने कलकत्ता से 'सार सुधानिधि' नामक पत्र निकाले। 1879 में उदयपुर राज्य के संरक्षण में 'सज्जन कीर्ति सुधारक' सन् 1880 में खड्गविलास प्रेस से रामदीन सिंह के सम्पादन में 'क्षत्रिय पत्रिका' सन् 1881 में प्रेमधन की 'आनन्द कादम्बिनी' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। पुस्तकों की आलोचना सर्वप्रथम 'आनन्द कादम्बिनी' में ही निकली थी। सन् 1882 में अम्बिकादत्त व्यास की 'वैष्णव पत्रिका' के दर्शन हुए और सन् 1883 में प्रतापनारायण मिश्र ने 'ब्राह्मण' निकाला जो परिष्कृत भाषा और हास्य–व्यंग के कारण शीघ्र ही लोकप्रिय बन गया। सन् 1885 में द्वितीय दैनिक–पत्र हिन्दुस्तान का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसी वर्ष कानपुर में 'भारतोदय' का भी जन्म हुआ। इस प्रकार इस काल में असंख्य पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन और धुरन्धर विद्वानों के सहयोग से इस कला की खूब उन्नति हुई, फिर भी उसमें परिपक्वता आने में अभी देर थी।

सन् 1885 में शिवदत्त की 'काव्यामृतवर्षिणी', कानपुर के 'भारतोदय' (दैनिक) सन् 1889 में अजमेर के 'राजस्थान–समाचार' के दर्शन हुए। यह स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचारक पत्र था। सन् 1890 में बूँदी से रामप्रसाद शर्मा के सम्पादन में 'सर्वहित' निकला यह पत्र भाषा, साहित्य, धर्म तथा समाज–विषयक सुन्दर सामग्री से परिपूर्ण रहता था। इसी वर्ष बाबू कृष्णचन्द्र बनर्जी ने 'हिन्दी बंगवासी' (साप्ताहिक) निकाला, जिसकी भाषा–शैली बँगला से प्रभावित थी। कुछ समय तक बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने भी इसका सम्पादन किया था। सन् 1813 में मिर्चापुर से प्रेमघनजी का 'नागरी नीरद' सन् 1896 में बम्बई में 'बेंकटेश्वर समाचार' तथा आगरा से ठाकुर हनुमन्त सिंह के 'राजपूत' का उदय हुआ। इनमें से 'बेंकटेश्वर समाचार' और राजपूत बहुत दिनों तक चलते रहे। 19वीं शताब्दी की अन्तिम चरण में स्त्री–समस्या और शिक्षा पर भी कुछ सुन्दर पत्र निकले, जिनमें 'सुगृहिणी' तथा 'भारत भगिनी' क्रमशः सन् 1888 और 1889 में प्रकाशित हुई। ये दोनों ही पत्रिकाएँ प्रयाग से निकली थीं।

भारतेन्दु–युग और उत्तर भारतेन्दु–युग में प्रकाशित होने वाली पत्र–पत्रिकाओं की संख्या लगभग 300–350 की है। इनमें अधिकांश मासिक और साप्ताहिक है। मासिक पत्रों में निबन्ध, उपन्यास, वार्ता आदि के रूप में सुन्दर साहित्यक सामग्री का प्रकाशन हुआ था। साप्ताहिक–पत्रों में समाचार और उन पर महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ प्रकाशित होती थी। उस समय दैनिक–पत्रों की अधिक मांग नहीं थी। इन सम्पूर्ण पत्रों ने उस काल में जनता में जागृति फैलाने में अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया था। इस सम्पूर्ण काल का आदर्श भारतेन्दु की पत्रकारिता थी। सब उनसे प्रभावित थे। इस काल में सन् 1895 में काशी में काशी से प्रकाशित होने वाली नागरी–प्रचारिणी पत्रिका का साहित्यिक–क्षेत्र में विशेष स्थान रहा है। इसमें गम्भीर साहित्य–समीक्षा का आरम्भ हुआ। इसलिए डॉ0 रामरतन भटनागर इसे हिन्दी–पत्रकारिता के विकास में एक निश्चित प्रकाश–स्तम्भ मानते हैं। इस काल में हमारी पत्रकार–कला का अनेक दिशाओं में विकास हुआ। आरम्भिक पत्र शिक्षा–प्रचार और धर्म–प्रचार तक ही सीमित रहे थे। भारतेन्दु ने सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक विचारधाराओं को विकास दिया। धर्म के क्षेत्र में आर्य समाज और सनातन धर्म के प्रचारक विशेष प्रयत्नशील थे। ब्रह्मसमाज और राधास्वामी मत का प्रचार करने को, कुछ पत्र भी इस काल में निकले। मिर्जापुर जैसे इसाई–केन्द्रों से इसाई–मत का प्रचार करने वाले कुछ पत्रों का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इन सभी पत्रों का, आज के युग में, जबकि हमारी पत्रकारकला उन्नति के शिखर पर पहुंचने का प्रयत्न कर रही है, विशेष महत्व नहीं प्रतीत होता,

परन्तु इन्हीं पत्रों ने हिन्दी की गद्य–शैली को पुष्ट करने तथा जनता में जीवन की नवीन ज्योति भरने का सराहनीय ऐतिहासिक कार्य किया था। इस दृष्टि से इनका महत्व सदैव अक्षुण्ण बना रहेगा।

इनमें से आज वही पत्र हमारे साहित्यिक–इतिहासों के विकास–क्रम में विशेष महत्वपूर्ण हैं जिन्होंने भाषा–शैली, साहित्य अथवा राजनीतिक के क्षेत्र में विशेष कार्य किया था। साहित्यिक दृष्टि से इस काल में पत्रों में हिन्दी प्रदीप, ब्राह्मण, क्षत्रिय–पत्रिका, आनन्द–कादम्बिनी, भारतेन्दु, देवनागरी प्रचारक नागरी नीरद, साहित्य–सुधानिधि, नागरी, प्रचारिणी पत्रिका आदि का विशेष महत्व है। राजनीतिक दृष्टि से 'भारत मित्र', सार सुधानिधि हिन्दुस्तान, भारत जीवन, भारतोदय और हिन्दी बंगवासी उल्लेखनीय है। इन पत्रों में हमारे 19वीं शताब्दी के साहित्य–रसिकों हिन्दी के कर्मठ उपासकों, शैलीकारों और चिन्तकों की सर्वश्रेष्ठ निधि सुरक्षित है। बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, सदानन्द मिश्र, रुद्रदत्त शर्मा, अम्बिकादत्त व्यास और बालमुकुन्द गुप्त जैसे कर्मठ, निर्भीक पत्रकारों और लेखकों की सजीव लेखनी से निकले हुए न जाने कितने निबन्ध, टिप्पणी, लेख, पत्र, हास–परिहास और रेखाचित्र आज हमें अलभ्य हो रहे हैं। इतने जीवट के पत्रकार हमें 20वीं शताब्दी में भी नहीं दिखाई देते। आज भी हमारे पत्रकार इनसे कुछ सीख सकते हैं। अपने समय में तो वे अग्रणी थे ही।"

सन् 1903 में 'सरस्वती' मासिक का प्रकाशन जगन्नाथ प्रसाद रत्नाकर तथा श्यामसुन्दर दास के सम्पादन में आरम्भ हुआ। प्रकाशन के कुछ ही दिनों के बाद इसका सम्पादनभार आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के सुदृढ़ कन्धों पर आ गया, जिन्होंने हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में युगान्तर उपस्थित कर दिया था। इस समय तक हिन्दी के लेखकों और पाठकों–दोनों को ही संख्या बहुत थोड़ी थी, फलस्वरूप 'सरस्वती' में लगभग एक वर्ष तक द्विवेदी जी को ही सम्पूर्ण लेख स्वयं लिखने पड़े। हिन्दी की इस निर्धनता की और उन्होंने हिन्दी–प्रेमियों का ध्यान आकर्षित किया और नवीन लेखकों को उत्साहित और प्रेरित कर अनेक आलोचक, नाटककार, कवि, उपन्यास–लेखक, कहानीकार तथा निबन्ध लेखक उत्पन्न किये। मैथिलीशरण गुप्त, प्रेमचन्द्र, निराला, प्रसाद, रायकृष्णदास, गणेशशंकर विद्यार्थी आदि साहित्यकार और पत्रकार द्विवेदीजी की प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष प्रेरणा उत्साहित होकर आगे आये। इस काल में आकर हिन्दी–पत्रकारिता के स्वरूप तथा स्तर में बहुत परिवर्तन हो गया। 19वीं सदी की पत्रकारिता की विविधता और बहुरूपता का इसमें विकास हुआ। 19वीं सदी के पत्रकारों को एक अव्यवस्थित भाषा–शैली का सहारा लेकर ही आगे बढ़ना पड़ा था। जनता में उस समय हिन्दी के प्रति अभिरुचि कम थी। धीरे–धीरे परिस्थिति बदली और 20वीं सदी तक आते–आते हिन्दी–पत्र साहित्यिक और राजनीतिक क्षेत्र में नेतृत्व करने लगे। इस सदी में धार्मिक और सामाजिक सुधार के आन्दोलन पीछे पड़ गये। राजनीतिक और साहित्यिक–चेतना ने उनका स्थान ग्रहण कर लिया। भारतीय जीवन में उस समय तक राष्ट्रीय चेतना भली प्रकार विकसित हो चुकी थी, अतः हिन्दी के पत्र इस चेतना के अग्रदूत बनकर आगे बढ़े।

सन् 1907 में 'अभ्युदय' का प्रकाशन आरम्भ हुआ जो पहले अर्द्ध–साप्ताहिक और फिर प्रथम महायुद्ध सन् (1914–18) के दौरान दैनिक के रूप में प्रकाशित होने लगा। सन् 1909 में प्रयास से राष्ट्रीय दृष्टिकोण वाले 'कर्मयोगी' तथा प्रसाद के प्रयत्न से पण्डित रूपनारायण पाण्डेय के सम्पादन में 'इन्दु' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। सन् 1913 में कानपुर से अमर शहीद गणेशशंकर विद्यार्थी ने 'प्रताप' निकाला। इसी के आदर्श से प्रेरित होकर 'कर्मवीर', 'स्वराज्य', 'सैनिक', और 'नवशक्ति' नामक राष्ट्रीय–चेतना प्रधान पत्रों का

प्रकाशन हुआ। सन् 1914 में कलकत्ता के कुछ मारवाड़ी सज्जनों के प्रयत्न से 'कलकत्ता समाचार' निकला। सन् 1917 में मूलचन्द्र अग्रवाल ने दैनिक 'विश्वमित्र' को जन्म दिया इसके पूर्व सन् 1915 में प्रयाग की विज्ञान परिषद ने 'विज्ञान' और हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने सन् 1911 में 'सम्मेलन पत्रिका का आरम्भ कर दिया था।

इसी काल में श्रृंखलित उपन्यास–कहानी के रूप में कई पत्र प्रकाशित हुए जैसे–'उपन्यास' (1901) 'हिन्दी नाविल' (1901), 'उपन्यास लहरी' (1902), 'उपन्यास सागर' (1903), 'उपन्यास बहार' (1907), और 'उपन्यास प्रचार' (1912)। समालोचन के क्षेत्र में 'समालोचक' (1902) और ऐतिहासिक शोध से सम्बन्धित 'इतिहास' (1905) प्रकाशित हुए। इन पत्रों का दृष्टिकोण एकांगी था। 'सरस्वती' विविध विषयों और स्तम्भों के साथ आगे बढ़ रही थी, इस कारण उसे सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई। उससे उत्साहित होकर और 'सरस्वती' को आदर्श मानकर कुछ और मासिक–पत्र निकले जिनमें 'भारतेन्दु' (1905), 'नागरी हितैषिणी पत्रिका' (1905), 'नागरी प्रचारक' (1906), और 'इन्दु' (1909), प्रमुख हैं। साहित्यिक–चेतना की दृष्टि से इस युग का नेतृत्व 'सरस्वती' और 'इन्दु' के हाथों में रहा था। "एक तरह से हम उन्हें उस युग की साहित्यिक पत्रकारिता का शीर्षमणि कह सकते हैं।" दोनों ने हिन्दी पत्रकारिता को एक नई दिशा की ओर उन्मुख किया था।

इस काल के आरम्भ में हिन्दी की पत्र–पत्रिकाएँ साहित्यिक–क्षेत्र में तो नेतृत्व ग्रहण किये रहीं, परन्तु राजनीतिक क्षेत्र का नेतृत्व हिन्दी की पत्रिकाओं के हाथों में न रहकर बँगला और मराठी के पत्रों के हाथ में था, क्योंकि ये दोनों प्रान्त ही उस समय नवीन राजनीतिक–चेतना के केन्द्र थे। 19वीं सदी में कलकत्ता में 'भारत मित्र' 'बंगवासी' आदि ही हमारी राजनैतिक–चेतना के उचित और प्रमुख वक्ता थे। इनमें 'भारत मित्र' का स्थान सर्वोपरि है। जैसे चुभते हुए राजनीतिक व्यंग्य इस पत्र में निकले, वैसे व्यंगो के दर्शन आज भी नहीं होते। ये सम्पूर्ण पत्र कलकत्ता से निकले थे। परन्तु हिन्दी–क्षेत्र में भी 'अभ्युदय', 'प्रताप', 'कर्मयोगी', 'हिन्दी केसरी' आदि पत्रों ने राजनीतिक क्षेत्र में आगे कदम बढ़ाया था। प्रथम महायुद्ध के दौरान कई दैनिक हिन्दी पत्रों का प्रकाशन भी आरम्भ हुआ, जैसे– कलकत्ता समाचार, 'स्वतन्त्र', 'विश्वामि', 'वेंकटेश्वर समाचार' 'विजय' आदि।

सन् 1920 के लगभग महात्मा गाँधी द्वारा राजनीतिक नेतृत्व ग्रहण करते ही भारत में नव–जीवन की एक नई लहर दौड़ गई। फलस्वरूप सन् 1921 से हिन्दी पत्रकारिता ने भी करवट बदली। राष्ट्रीय चेतना और नवीन साहित्यिक चेतना का प्रकाशन–इनका प्रधान उद्देश्य बना। इस काल में राजनैतिक और साहित्यिक–दोनों क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। इस परिवर्तन को लाने में हमारे पत्रकारों ने भी अपना महत्वपूर्ण भाग अदा किया। इसी समय विश्वविद्यालयों में हिन्दी को सम्मानपूर्ण स्थान मिला। काँग्रेस ने महात्मा गाँधी के नेतृत्व में हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा घोषित किया। इस भावना से प्रेरित होकर इस युग में कुछ ऐसे कृति सम्पादक सामने आये जिन्हें अंग्रेजी, बंगला, मराठी आदि की पत्रकारिता का अच्छा ज्ञान था। फलस्वरूप हिन्दी पत्रकारिता का स्तर उन्नत होने लगा। राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रगति के साथ–साथ हिन्दी पत्रों के सम्मान और महत्व में भी वृद्धि होने लगी। राष्ट्रीय आन्दोलन को ग्रामीणों और श्रमिकों तक पहुँचाने में उन्होंने बहुत बड़ी सहायता पहुँचाई। इससे रूष्ट होकर अंग्रेजी–सरकार ने नये–नये कानून बनाये, हिन्दी पत्रों की स्वतन्त्रता पर समय–असमय भयंकर आघात किये, परन्तु हमारे इस युग के अधिकांश पत्रकार कर्मठ, राष्ट्रसेवी तथा निर्भीक देशभक्त थे। उन्होंने सरकारी अत्याचारों का दृढ़तापूर्वक सामना किया

और इसके लिए वे लोग किसी भी प्रकार का त्याग करने में किसी से पीछे नहीं रहे।

सन् 1821 में नवलकिशोर प्रेस (लखनऊ) से 'माधुरी' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसका सम्पादन–भार समय–समय पर पं. कृष्ण बिहारी मिश्र, प्रेमचन्द्र, मातादीन शुक्ल जैसे प्रसिद्ध साहित्य–सेवियों ने उठाया। कुछ समय तक 'माधुरी' का स्थान हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं में अत्यन्त सम्मानपूर्वक और प्रमुख बना रहा। 'माधुरी' की लोकप्रियता से प्रभावित होकर 'महारथी', 'श्री शारदा', 'मनोरमा' आदि पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ, परन्तु ये कुछ दिन चलकर ही बन्द हो गई। सन् 1923 में 'चाँद' निकला। इस पत्र ने अपने राष्ट्रीय विचारों के कारण बहुत प्रसिद्धि पाई और साथ ही भयंकर सरकारी अतचार भी सहे। इसके 'मारवाड़ी' अंक ने मारवाड़ी समाज की कुरीतियों का नग्न प्रदश्नन कर मारवाड़ियों को क्रुद्ध किया और 'फाँसी' अंक ने अंग्रेज सरकार को रुष्ट कर दिया। ये दोनों अंक तुरन्त जब्त कर लिये गये। बाद में महादेवी वर्मा के सम्पादन में यह भारतीय महिलाओं का एकमात्र मुखपत्र बन गया इसके बाद 'समालोचक' (1924), और 'चित्रपट' (1925) का उदय हुआ। (1926), में 'कल्याण' का प्रकाशन आरम्भ किया गया जो आज तक हिन्दी का सर्वप्रथम और एकमात्र धार्मिक पत्र रहा है। सन् 1927 में लखनऊ में दुलारेलाल भार्गव ने 'सुधा' निकाली। इसके बाद क्रमशः –विशाल भारत (1928), त्यागभूमि (1928), हंस (1930), विश्वमित्र (1933), साहित्य संदेश (1938), कमला (1939), जीवन–साहित्य (1940), विश्वभारती (1942), संगम (1942), नया साहित्य (1945), परिजात (1945), हिमालय (1946), साधना (1948), आलोचना (1951), आदि मासिक, (आलोचना–त्रैमासिक) पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ। ये सभी पत्रिकाएँ प्रमुख रूप से साहित्यिक–साधना को ही अपना लक्ष्य बनाकर चली है। साथ ही इनमें राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा विभिन्न सम–सामयिक समस्याओं पर भी लेखादि प्रकाशित होते रहते हैं। हिन्दी के अनेक उच्चकोटि के उपन्यास, कहानियाँ, कविताएँ आदि पहले–पहले हिन्दी–पत्रिकाओं में प्रकाशित होकर फिर पुस्तक के रूप में जनता के सामने आईं।

पिछले कुछ वर्षों से हिन्दी में सुन्दर सामग्री से युक्त अनेक मासिक, त्रैमासिक पत्र निकलने आरम्भ हुए हैं, जिनमें अजन्ता, कल्पना, ज्ञानोदय, युग चेतना, नया समाज, अवन्तिका, सरिता, पाटल, आजकल, नई धारा, समाज, राष्ट्रभारती, राष्ट्रवाणी, सुप्रभात, नवनीत, लहर, आदर्श, साहित्यकार, कृति, कहानी, नई कहानी, नीहारिका, सारिका, कादम्बिनी–आदि मासिक पत्रिकाएँ प्रमुख हैं। त्रैमासिक पत्र भी निकले हैं, जैसे–परिकल्पना, दर्शन आदि। इनके अतिरिक्त अर्द्धवार्षिक संकलनों के रूप में कुछ नवीन परन्तु नितान्त उपादेय पत्रिकाओं का प्रकाशन होने लगा है, जैसे–संकेत, निकष, हंस निष्ठा आदि। अनेक अहिन्दी–भाषी क्षेत्रों में अनेक पत्र–पत्रिकाएँ हिन्दी में प्रकाशित होने लगी है, जो हिन्दी का राष्ट्रभाषा के रूप में व्यापक प्रचार करने का प्रमुख साधन है।

सन् 1958 में आगरा से प्रसिद्ध हिन्दी आलोचक डा0 रामविलास शर्मा के सम्पादन में 'समालोचक' नामक एक नवीन साहित्यिक–आलोचना–प्रधान मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसने पहला अंक 'सौन्दर्यशास्त्र' जैसे गहन तथा हिन्दी में अभी तक अछूते समझे जाने वाले विषय पर निकाल कर हिन्दी लगत में अपना प्रमुख स्थान बना लिया। इसका यह विशेषांक अपने विषय के एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ–ग्रन्थ के समान उपयोगी और लोकप्रिय प्रमाणित हुआ। इसके दूसरे विशेषांक 'यथार्थवाद' ने भी पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त की। परन्तु दुर्भाग्य से यह दो वर्ष चलकर बन्द हो गया। आगरा से इस समय 'साहित्य–परिचय' नामक मासिक प्रकाशित हो रहा है। जनवरी 67 में

प्रकाशित 'आधुनिक साहित्य विशेषांक' तथा 1968 में प्रकाशित 'भाषा समस्या विशेषांक' से इसका साहित्यिक पत्रिकाओं में अच्छा स्थान बन गया है। इधर पिछले कुछ वर्षों से 'साहित्य–परिचय' के शिक्षा–सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं और पत्रों को लेकर जो वार्षिक विशेषांक निकलते रहे हैं, उन्हें शिक्षा–जगत की अमूल्य सेवा के रूप में सदैव याद किया जाता रहेगा। इन नवीन प्रयासों को देखते हुए हिन्दी–पत्रिकारिता का भविष्य अत्यन्त उज्जवल और महान दिखाई देता है।

हिन्दी–साहित्य के इतिहास का लिखना तो उपर्युक्त पत्र–पत्रिकाओं के सहयोग के अभाव में नितान्त असम्भव है। सामयिक साहित्यिक गतिविधियों तथा विचारधाराओं का जैसा सुसंगत एवं क्रमिक विकास इनके द्वारा उपलब्ध होता है, वैसा पुस्तकों द्वारा असम्भव है। आधुनिक हिन्दी–साहित्य का इतिहास–सरस्वती, इन्दु, माधुरी, त्यागभूमि, विशाल भारत, सुधा हंस और रुपाभ आदि पत्रिकाओं के अभाव में लिखना असम्भव ही है। क्योंकि साहित्यिक–निर्माण में इनका सर्वाधिक रहा है। इनमें हमें साहित्य का 'सक्रिय, सप्राण, गतिशील रूप' प्राप्त होता है।

इस युग की राजनैतिक पत्र–पत्रिकाओं में–कर्मवरी (1924), सैनिक (1924), स्वदेश (1925), हिन्दू पंच (1926), जागरण (1929), हिन्दी मिलाप (1929), स्वराज्य (1931), नवयुग (1932), हरिजन सेवक (1932), विश्वबन्धु (1933), नवशक्ति (1934), योगी (1934), हिन्दू (1936), देशदूत (1938), राष्ट्रीयता (1938), लोकवाणी (1942), हुंकार (1942), संसार (1933), सन्मार्ग (1943), और विप्लव आदि का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इनमें से अधिकांश साप्ताहिक और शेष्ज्ञ मासिक है। इनमें उच्चकोटि की सम्पादन–कला के दर्शन होते हैं।

दैनिक–पत्रों में 'आज' ने हिन्दी–दैनिकों का उसी प्रकार पथ–प्रदर्शन किया है जिस प्रकार 'सरस्वती' ने मासिक–पत्रिकाओं का किया था। 'आज' और उसके सम्पादक बाबूराव विष्णुराव पराडकर का पत्रकारिता के क्षेत्र में वही महत्व है जो साहित्यिक क्षेत्र में महावीर प्रसाद द्विवेदी और 'सरस्वती' का है। 'आज' ने हिन्दी को अनेक नये प्रतिभाशाली पत्रकार दिये हैं। 'आज' से प्रेरित होकर निकलने वाले हिन्दी दैनिक में–सैनिक (1924), शक्ति (1930), प्रताप (1931), नवयुग (1931), नवराष्ट्र (1933), भारत (1933), लोकमान्य (1933), विश्वमित्र कलकत्ता 1917, बम्बई 1931, और दिल्ली 1941, नवभारत (1934), राष्ट्रवाणी 1941, संसार 1943(1944), नया हिन्दुस्तानी (1944), जयहिन्द (1946), और सन्मार्ग (1946), महत्वपूर्ण है। इनके अतिरिक्त कुछ पत्र और भी महत्वपूर्ण हैं जो किसी से प्रभावित न होकर स्वतन्त्र रूप से विकसित हुए हैं। इनमें–हिन्दुस्तान, अमृतपत्रिका, नवभारत–टाइम्स, जनसत्ता आदि–विशेष प्रसिद्ध है। दैनिक पत्रकार–कला का विकास द्वितीय महायुद्ध के दौरान विशेष रूप से हुआ था। आजकल प्रत्येक नगर में दो–चार स्थानीय दैनिक पत्र निकल रहे हैं जो स्थानीय जनता की नवीन समाचार–विषयक मानसिक भूख को शान्त करने का प्रयत्न करते हैं।

साप्ताहिक पत्रों में आजकल 'धर्मयुग' 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'हिन्दी ब्लिट्ज', 'दिनमान', 'जनयुग' 'पाञ्चजन्य', 'रविवार' तथा अनेक दैनिक–पत्रों के साप्ताहिक संस्करण विशेष महत्वपूर्ण है।

साप्ताहिक पत्रों की द ृष्टि से हिन्दी को अधिक समृद्ध नहीं माना जा सकता। इसमें उच्चकोटि के कुर चार–पाँच पत्रों का ही होना विशेष चिन्ता का विषय है। यह हिन्दी की पत्रकारिता पर भी एक कलंक है।

इस युग की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में दयानन्द सन्देश, वैदिक धर्म (सितारा), आर्य–जगत, आर्यावर्त्त, प्रेम सन्देश, सन्मार्ग–सिद्धान्त (काशी), जनवाणी, जैन जगत,

जैन मित्र धर्मदूत (सारनाथ), भानूदय (मिशन प्रेस, जबलपुर), अदिति (पाँडुचेरी), कल्पवृक्ष (उज्जैन), गीता–धर्म (बनारस), कल्याण (गोरखपुर), भारतीय संस्कृति, कबीर–सन्देश (बाराबंकी), दादू सेवक (जयपुर)।

इतिहास (दिल्ली), नागरी प्रचारिणी पत्रिका (काशी), शोध पत्रिका (उदयपुर), हिन्दुस्तानी (प्रयाग), भारतीय विद्या (बम्बई)।

जनवाणी (काशी), नया समाज (कलकत्ता), विश्ववाणी, (प्रयाग), हंस (काशी), आलोचना (दिल्ली), साहित्य–सन्देश (आगरा), 'साहित्य–परिचय' (आगरा), आँधी (काशी), कल्पना (हैदराबाद), माया (प्रयाग), रानी (कलकत्ता), सरिता (नई दिल्ली), सुकवि (कानपुर), दृष्टिकोण (पटना), समालोचक (आगरा), ज्ञानोदय (बनारस), नवनीत (बम्बई), नया पथ (लखनऊ)।

अमर–ज्योति (कानपुर), जीवन–साहित्य (नई दिल्ली), युगधारा (काशी), मजदूर की आवाज (दिल्ली), निर्भीक (कोटा), संघर्ष (लखनऊ), विप्लव (लखनऊ), अरुणोदय (इटावा), पाञ्चजन्य (लखनऊ), चेतना (काशी), किसान (कानपुर)।

चाबुक (कलकत्ता), नोकझोंक (आगरा), तरंग (काशी)।

शिक्षा (लखनऊ), नई तालीम (वर्धा), शिक्षक–बन्धु (अलीगढ़)।

आरोग्य (गोरखपुर) स्वास्थ्य–सुधा (नई दिल्ली) जीवन–सखा (प्रयाग)।

विज्ञान (प्रयाग), विज्ञान लोक (आगरा)।

अर्थ सन्देश (वर्धा), उद्यम (नागपुर), व्यापार (कलकत्ता), उद्योग (कानपुर)।

खिलौना (प्रयाग), चमचम (प्रयाग), बालभारती (दिल्ली), चन्दा मामा (मद्रास), पराग (बम्बई), नन्दन, इन्द्रजाल कॉमिक्स (दिल्ली)।

कन्या (बनारस), जननी (प्रयाग), जाग्रत–महिमा (उदयपुर), दीदी (प्रयाग)।

कलानिधि (काशी), नृत्यशाला (हाथरस), लेखक (प्रयाग), संगीत (हाथरस), सारंग (नई दिल्ली), अभिनय (कलकत्ता), कौमुदी (दिल्ली), रजतपट (बम्बई), सिनेमा (कानपुर), चित्रपट (दिल्ली), रंगभूमि (दिल्ली), हिन्दी–स्क्रीन, और माधुरी (बम्बई)।

न्याय बोध (नागपुर)।

उपर्युक्त विवेचन और विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारी पत्रकार–कला साहित्य के अन्य अंगो के समान ही बहुमुखी और समृद्ध है। उसमें मुख्यतः हमारे मध्यवर्गीय समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक साहित्यिक और राजनैतिक चेतना का क्रमिक इतिहास वर्णित हैं आज 'हिन्दी' राष्ट्रभाषा घोषित हो चुकी है। कई प्रान्तों में वही एकमात्र राज्य–भाषा है। इससे हिन्दी पत्रकारिता को विशेष प्रोत्साहन मिला है, जो उसे निरन्तर विकास–पथ पर बढ़ने की प्रेरणा दे रहा है। भारत के बड़े–बड़े पूँजीपतियों द्वारा संचालित कई प्रकाशन–संस्थायें इस क्षेत्र में अमूल्य कार्य कर रही हैं। उनके द्वारा नित नए प्रकाशन हो रहे हैं, जिससे इस क्षेत्र की अभिवृद्धि में पर्याप्त सहायता मिल रही है। परन्तु दुःख का विषय यह है कि हिन्दी में समाजवादी विचारधारा को लेकर चलने वाली जनवादी पत्र–पत्रिकाएँ पनप नहीं पातीं। अर्थाभाव के कारण वे कुछ दिन चलकर ही बन्द हो जाती है। दूसरे, हिन्दी में अच्छे, उच्च स्तर के साप्ताहिक–पत्रों का अभाव है। 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'दिनमान,' 'पाञ्चजन्य', 'रविवार' जैसे कुछ गिने–चुने अधिकांश साप्ताहिक–पत्र विशुद्ध रूप से विभिन्न राजनीतिक दलों का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। वस्तुतः साप्ताहिकों की दृष्टि से हिन्दी को दरिद्र ही माना जायेगा।

समष्टि रूप से हिन्दी–पत्रकारिता के अधिक उन्नत और व्यापक तथा प्रभावशाली न

होने का प्रधान कारण सरकार की अंग्रेजी–परस्त नीति और पक्षपात है। अंग्रेजी–पत्रों को सभी दृष्टि से अधिक महत्व दिया जाता है। दूसरी बात यह है कि कुछ धनी लोगों ने इस क्षेत्र में अपना एकाधिकार–सा स्थापित कर रखा है। धनी–वर्ग मूलतः स्वार्थी होने के कारण एक निश्चित दृष्टिकोण के अनुसार ही अपने पत्रों का प्रकाशन करता है, जो प्रायः जन–विरोधी ही होता है। इसलिए हिन्दी के पत्र जन–भावना का सही प्रतिनिधित्व नहीं कर पाते। तीसरी बात यह है कि हिन्दी–पत्रकारिता के प्रशिक्षण की कोई उचित व्यवस्था न होने के कारण उसका स्तर ऊपर नहीं उठ पाता। इन्हीं कई कारणों ने मिलकर हिन्दी–पत्रकारिता के स्वाभाविक विकास में बाधाएँ डाल रखी हैं। इन बाधाओं को दूर करने पर ही उसका भविष्य उज्जवल बन सकता है।

संदर्भ–सूची

- समकालीन हिन्दी पत्रकारिता–डा0 विजयदत्त श्रीधर
- हिन्दी के प्रमुख समाचार पत्र और पत्रिकाएँ (4 खण्ड)–सं0 अच्युतानन्द मिश्र
- भारतीय पत्रकारिता कोश (खण्ड–2)– विजय दत्त श्रीधर
- हिन्दी पत्रकारिता और स्वाधीनता संग्राम–डॉ0 कृष्णदेव अरविन्द
- सांस्कृतिक राष्ट्रवाद कल–आज और कल–त्रिवेद्रम
- हिन्दी पत्रकारिता–डॉ0 कृष्ण बिहारी सिंह मिश्र
- समाचार पत्रों का इतिहास–पं. अम्बिका प्रसाद बाजपेई।
- हिन्दी पत्रकारिता–विविध आयाम– डा0 वेद प्रताप वैदिक
- सूचना एवं प्रौद्योगिकी, हिन्दी औ अनुवाद–डॉ0 पूनम चन्द्र टण्डन
- भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष– विपिन चन्द्र
- हिन्दी पत्र–पत्रिकाएँ, उद्भव और विकास–डॉ0 आर0पी0 वर्मा

पत्र–पत्रिकाएँ

- ✓ विकी पीडिया
- ✓ हिन्दी प्रदीप, बाल कृष्ण भट्ट दिसम्बर अंक
- ✓ नवनीत–दिसम्बर 1985
- ✓ भट्ट निबंधावती–धनन्जय भट्ट
- ✓ भारत जीवन, मार्च 1887
- ✓ उचित वक्ता–1880 अंक 9
- ✓ कविवचन सुधा फरवर 1874
- ✓ बाला बोधिनी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जनवरी 1878
- ✓ सार सुधानिधि वर्ष 2 अंक–8

Copyright © 2016, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.